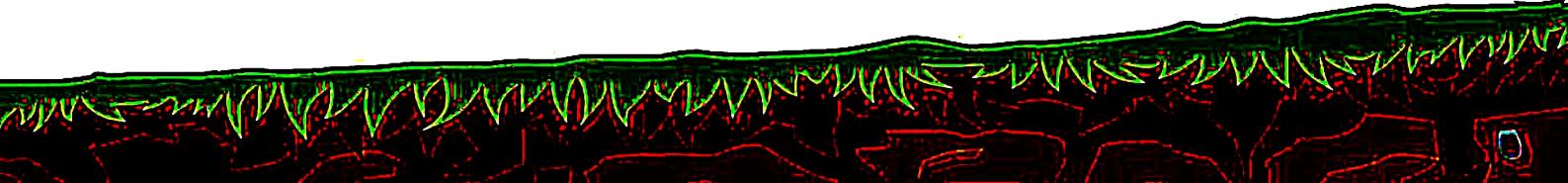


ब्रह्म ज्ञान योग संस्थान

विस्वाँ सीतापुर



“ राम कृपा ”

राम कृपा क्या हैः —

राम कृपा वह धार है, प्रकट आत्मघट होय !
यही सार का सार है, लक्ष्य जीव का सोय !!

मन और जीव का लक्ष्य है, यही धार एक जान!
सन्मुख मन हो धार के, पावै पद निर्माण !!

यही धार है आत्मा, यही है पद निर्वाण !
राम, कृष्ण भी यही है, गुरु कृपा भी जान !!

प्रकट है करना आत्मघट, मनुज शरीर का लक्ष्य !
मन हो सन्मुख धार के, राम जीव प्रत्यक्ष!!

राम कृपा ही गुरु कृपा, कृपा दृष्टि सब एक !
संत कृपा भी यही है, प्रकट हो तभी विवेक !!

सभी ग्रंथ सभी पंथ का, राम कृपा ही सार !
मूल सभी का यही है, यही सार का सार !!

राम कृपा की विशेषता :

जो इच्छा करिहौ मन माही!
राम कृपा कुछ दुर्लभ नाही!!

सकल बिज्ज व्यापहि नहि तेही !
राम सुकृपा बिलोकहिं जेही !!

सोइ सादर सर मज्जन करई!
महा घोर त्रय ताप न जरई!!

मानस रोग भी नष्ट हो, नष्ट हो तीनों ताप!
परिवर्तन हो भाग्य में, सभी नष्ट हो पाप!!

जागृत सातों चक्र हों, जागृत सात शरीर !
जीव बूँद से सिंधु हो, परमधार के तीर !!

मन कागा से हंस हो, मति सुमति है जाय !
परमगति तुरतै मिले, मन शून्य है जाय !!

पद तीनों ही शून्य हो, शून्य हो सातों लोक !
पाँच कोष भी शून्य हो, पहुँचे जीव अलोक !!

अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनंदमय कोष !
तन, मन, सुरत हैं, तीन पद, मन के सात हैं लोक !!

मन सन्मुख है इन्ही के, फंसा इन्ही में होय !
मन सन्मुख हो आत्म के, स्वतः शून्य सब होय !!

कैसे खोजे :-

सागरमंथन, महाभारत, राम और रावण, युद्ध ।
गंगा अवतरण यही है, यही सार, यही बुद्ध ॥

खारे पानी का समुद्र, मन ही है इसे मान ।
क्षीर सिंधु वह धार है, सद्गुरु से पहिचान ॥

आधार विष्णु का है यही, लखों क्षीर का सिन्धु ।
विष्णु जी लेटे इसीपर, यही खोजना सिन्धु ॥

सभी ग्रंथ, सभी पंथ का सबका मूल है बेद ।
सब निकले हैं बेद से, "ब्रह्म" आधार है बेद ॥

बेद मार्ग के गुरु सब, बेदों ने कहा नेति ।
बेद मार्ग से ना मिले, इसके आगे चेति ॥

ध्यान, भजन, जप-तप सभी, बेद मार्ग है मान ।
सद्गुरु का यह मत नहीं, इसके आगे जान ॥

न सद्गुरु का पंथ हैं, न है कोई ग्रंथ ।
क्रिया, कर्म कुछ है नहीं, तुरंत बनावें सन्त ॥

-- जीव की यात्रा -

1. ब्रेता में टृटा धनुष, द्वापर तीनों व्यूह !

रही अधूरी यात्रा, सन्मुख हुआ न जीव !!

2. द्यान प्रथम युग, मख युग दूजे !

द्वापर परितोषिक पद पूजे !!

कलि केवल एक नाम अधारा !

वेद, पुराण, सन्तमत सारा !!

“ जीव ” को राम या कृष्ण होना है:-

- 1. तुम्हारी आदत है तुम राम की, कृष्ण की तुरंत ही पूजा करने लग जाते हो !**
- 2. राम की, कृष्ण की तुम्हें पूजा नहीं करनी है बल्कि जीव को राम और कृष्ण होना है !**
- 3. बनना नहीं है, बनता तो शरीर है, राम के कपड़े पहनकर तुम अपने शरीर को राम बना देते हो !**
- 4. शरीर को बनाने से नहीं, जीव को होना है:- राम और कृष्ण !**
- 5. राम और कृष्ण का भेद जानों !**

6. तुम्हारी आत्मा ही राम है, कृष्ण है !
केवल उसी एक को ही जानना है !
7. कैसे जानोगे:- केवल जीव को, मन को
आत्मा के सन्मुख करना है !
8. जैसे ही मन आत्मा के सन्मुख होगा
फिर जीव, जीव नहीं रहेगा तुरंत ही
आत्मा बन जायेगा !
9. आत्मा कहाँ खोजे:-
- (I) न शरीर के अंदर न शरीर के
बाहर खोजना है !
- (II) न वह साकार है, न निराकार !

10. वह अपरोक्ष है जैसे:-

- (I) पानी के ऊपर तेल की बूँद !
- (II) न बूँद तेल के अंदर है न बाहर है!

**11. पूर्ण सद्गुरु खोजकर भेद जानों और
तुरंत ही अपने जीव को आत्मा के
सन्मुख करके :-**

- (I) जीव को आत्मा बना दो !
- (II) मन को हँस बना दो !

“मन का कार्य ”

12.किसी वस्तु को मन अपनी तरफ कैसे

खींचता है या पकड़ता है :-

(I) विचारों द्वारा !

(II) भावों द्वारा !

(III) अपने अंदर चिन्ह बनाकर !

(IV) सुरत को स्थिर करके !

(V) ध्यान से या सोते समय अंदर के

पर्द खुल जाते हैं जिससे अपने

मन के अंदर भेजकर !

13.मन को शून्य करने से क्या लाभ है:-

- (I) मन के अंदर के पर्दे या सतहें
खुल जाती है !
- (II) प्रकृति और ब्रह्माण्ड की दृष्टि
हमारी तरफ हो जाती है !
- (III) देवलोक और ब्रह्मलोक के सभी
पर्दे और खिड़कियाँ या फाटक खुल
जाते हैं !
- (IV) मन, अमन और निर्मल होने
लगता है !
- (V) मन बड़ा हो जाता है, मन का बड़ा
होना ही अध्यात्म है !

१५. मन को हंस बनाने से क्या लाभ है :-

१. कबिरा मन निर्मल हुआ, जैसे गंगा नीर।
पीछे-पीछे हरि फिरै, कहत कबीर कबीर॥
२. आत्मघट प्रकट हो जाता है, और परमात्मा.
की धार आत्मघट पर गिरने लगती है।
३. मन सफेद या निर्मल होने से मानस
रोग समाप्त हो जाते हैं।
४. मन मे आत्मा की धार आने लगती है और
मन आत्मा द्वारा संचालित हो जाता है।
५. सफेद, स्वच्छ और निर्मल मन में ही रिद्धिया-
सिद्धिया और शक्तियाँ निवास करती हैं।
६. मन कल्प वृक्ष बन जाता है, जो भी संसार
की वस्तु सोचते हैं, वे हमे प्राप्त होने लगती
हैं।
७. मन और सुरत दोनों साथ-साथ रहने लगते हैं।
८. हमारी सुरत भी स्वतः ही स्थिर हो जाती हैं।

15. मनुष्य शरीर में धार कैसे प्रकट होः-

धार प्रकट नहीं होती है, केवल मनुष्य शरीर में "आत्मघट" प्रकट करना पड़ता है, और धार स्वतः ही उसी पर गिरने लगती है, जैसे टी.वी. का ऐन्टेना ।

16. आत्मघट कैसे प्रकट होता हैः -

1. सदगुरु अपनी पारस सुरत से शिष्य की सुरत को छू देता है, छूते ही तुरंत शिष्य की सुरत पारस बन जाती है, और आत्मघट प्रकट हो जाता हैं ।
2. मन शून्य और सुरत स्थिर, होने से आत्मघट प्रकट हो जाता हैं ।
3. शंकर का भजन और शिव का धनुष टूटते ही आत्मघट प्रकट हो जाता हैं ।
4. तीनों पदों को शून्य करने से "आत्मघट" प्रकट हो जाता हैं :
 - पहला पद - तन (इंद्रियां अंतर्मुखी)
 - दूसरा पद - मन शून्य
 - तीसरा पद - सुरत स्थिर

17. क्या सभी मनुष्यों के शरीर में आत्मघट पहले से ही होता हैः -

आत्मघट पहले से प्रकट नहीं होता हैं, मनुष्य
शरीर में केवल

1. तन घट
2. मन घट

केवल दो ही घट पहले से होते हैं।
आत्मघट गुरु के यहां जाने से प्रकट होता हैं।

सब घट मेरो साइयां, खाली घट न कोय ।
बलिहारी व घट की, जो घट परगट होय ॥

सभी के मनुष्य शरीर में आत्मघट बीज़ रूप मे
पहले से ही होता हैं, जैसे जब बीज अंकुरित
होता है, फिर पूरा पेड़ बन जाता है, ऐसे ही
बीज के अंदर पूरा पेड़ पहले से ही मौजूद होता
है, ऐसे ही हमारे शरीर में आत्मघट बीज रूप मे
मौजूद रहता है।

जो भी चाहे अपने शरीर मे आत्मघट प्रकट कर
सकता है।

। ४. "आत्मघट" प्रकट होने से पहले क्या-क्या सावधानियां जरूरी हैं: -

1. सकारात्मक विचार हो।
2. उंची सोच हो।
3. मन में कोई भी नकारात्मक बात न आने पाए न उसका कोई चिन्ह बनने पाए, नहीं तो वह होने लगेगा।
4. वाणी मीठी, सार्थक हो और जो भी बात किसी को कही जाए पात्रता देखकर कही जाए।
5. स्वभाव नम्र होना चाहिए।
6. क्रोध और लालच बिल्कुल न हो।
7. परोपकार की भावना हो।
8. सभी का कल्याण सोचो।
9. सर्वे भवन्तु सुखिनः का भाव हो।
10. सम स्थिति में रहना सीखे।

19. राम कृपा, गुरु कृपा, संत कृपा,
कृपादृष्टि क्या सब एक ही हैः -

हाँ, सभी एक ही हैं ।

20. वेद, शास्त्र, गीता, रामायण,
सभी का सार क्या हैः -

राम कृपा ही सभी का सार हैं ।

सुरेशाद्याल

ब्रह्मज्ञान योग संस्थान मोचकला

बिसवाँ सीतापुर (उ० प्र०)

सम्पर्क सूत्र - 9984257903